छात्र जीवन से व्यावसायिक जीवन में अंतरण : कुछ विचार*

के.सी.चक्रवर्ती

भारतीय ओवरसीज बैंक के सीएमडी डॉ. एम. नरेन्द्र, वी.वी. वन्नियापेरुमल कॉलेज फॉर वुमेन की प्रिंसिपल, डॉ. (श्रीमती) पी. सेल्वामीनाक्षी, वी.वी. वन्नियापेरूमल महिला कॉलेज के प्रबन्ध निदेशक मण्डल के सचिव श्री एस.एम.एस.मणिक्कावसगम, तथा संयुक्त सचिव श्रीमती एम.एम.एन. जिक्की माधवन, प्रबुद्ध श्रोतागण तथा प्रिय छात्रो! इस प्रख्यात महाविद्यालय में आज कन्वोकेशन भाषण देने के लिए आप लोगों के बीच उपस्थित होकर मैं अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। इस तथ्य से मुझे और भी गर्व का अनुभव हो रहा है कि मुझे उस कॉलेज में कन्वोकेशन भाषण देने का अवसर प्रदान किया गया है जिसका उद्घाटन हमारे युग के महान स्वतंत्रता सेनानी और स्टेट्समैन/ भारतरत्न माननीय श्री के. कामराज द्वारा किया गया था जिनका मैं अनन्य समर्थक हूं। आपके कॉलेज ने गत पांच दशकों में शैक्षणिक उत्कृष्टता का जो स्तर छुआ है वह उस व्यक्ति की दूर दृष्टि को एक शानदार श्रद्धांजलि है जिसने स्कूलों में मुफ्त मध्याह्न भोजन योजना शुरु की और 1950 के दौरान, गरीब बच्चों के लिए 11वीं कक्षा तक मुफ्त शिक्षा देने का कार्य शुरू किया।

2. तेज़ होनहार युवा छात्रों के बीच होना, सदा ही एक ताज़गी भरा और अच्छा लगने वाला अनुभव होता है और जब भी कोई ऐसा अवसर आता है तो मैं सदा ही उसका लाभ उठाना चाहता हूं। सर्वप्रथम तो मैं कॉलेज के उन सभी छात्रों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने अपने-अपने संबंधित विषयों में सफलता पूर्वक स्नातकीय परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं और आज अपनी डिग्रियां प्राप्त कर रहे हैं। दीक्षान्त समारोह सदा ही विशेष होते हैं क्योंकि वे दो चीज़ें एक साथ प्रदान करते हैं - समापन भी और साथ ही प्रारंभ भी। तार्किकतः वे एक औपचारिक शिक्षण का समापन करते हैं और स्नातक हो चुके छात्रों को तथा साथ ही संकाय सदस्यों को भी राहत, संतुष्टि और खुशी प्रदान करते हैं। तथापि वे इसलिए और भी अधिक विशेष होते हैं क्योंकि जैसे ही स्नातक, संसार के विश्वविद्यालय में कदम रखते हैं, सपने संजोए हुए, जीवन की अज्ञात धरा पर आशाओं और उम्मीदों के साथ, तब वे जीवन-भर चलने वाले एक अनौपचारिक शिक्षण की शुरुआत करते हैं। हमारे दिनों में, जब हम परीक्षा पास करके बाहर निकलते थे, तब वहां कोई स्वप्न नहीं अपितु दुःस्वप्न होता था, क्योंकि नौकरी मिलने में बड़ी कठिनाई आती थी। हालांकि वक्त के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों, खासकर सेवा क्षेत्र में रोज़गार के पर्याप्त अवसर बन गए हैं मगर एक संतुष्टि देने वाली नौकरी मिलना आज भी बड़ा कठिन है। तथापि मुझे यकीन है कि इस पूजनीय संस्था ने आपको उन सभी चुनौतियों का सामना करने और उन्हें जीतने के लिए तैयार कर दिया है जो जीवन में आपके सामने आएंगी। इन होनहार छात्रों के साथ आज का दिन बिताने में मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं क्योंकि ये भविष्य में सफल, वित्तीय और सामाजिक उद्यमी सिद्ध होंगे, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

3. यह दीक्षांत समारोह आपके कैरियर में एक प्रमुख मील का पत्थर साबित होगा। इससे न केवल यह संकेत मिलता है कि आपने इन वर्षों में जो कठिन परिश्रम किया है उसका आज समापन है बल्कि यह आज आपके छात्र जीवन से व्यावसायिक जीवन में आने का भी संकेत है। इतनी महत्त्वपूर्ण शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने के लिए कितने समय, प्रयास, और निष्ठा की आवश्यकता पड़ती है मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ। मैं इस अवसर का लाभ आपके परिवारों के सदस्यों को बधाई देने के लिए भी उठाना चाहता हूँ जो आपके जीवन के इस बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिवस के अवसर पर यहाँ उपस्थित हैं। मुझे विश्वास है कि इन्होंने भी आपकी इस सफलता में महान योगदान दिया होगा और वे आपके इस महत्त्वपूर्ण क्षण में

* 24 मार्च 2013 को विरुदुनगर के वी.वी.बेन्निया पेरुमल कॉलेज फॉर वुमेन में, भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर डॉ. के.सी.चक्रवर्ती द्वारा दिया गया कन्वोकेशन भाषण। इस अभिभाषण को तैयार करने में श्री शुद्धसत्त्व घोष द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए उनका हार्दिक आभार।

पूरे सहभागी हैं। आपको यह सदा याद रखना चाहिए कि अपने माता पिता तथा परिवार के प्यार और समर्थन और यहाँ के संकाय सदस्यों की निष्ठा और प्रतिबद्धता के बिना आपको अपने जीवन में इस मील के पत्थर तक पहुँचना संभव नहीं हो पाता।

4. हमारे जैसे देश में शिक्षा न केवल सुनहरे भविष्य की कुँजी है बल्कि यह ज़िंदा रहने की भी कुँजी है। शिक्षा को ही प्रारंभिक कार्यनीति के रूप में अपनाते हुए हमारे द्रष्टाओं और नेताओं ने विशेषकर लड़कियों और महिलाओं की क्षमताओं के उपयोग द्वारा सीखने, नेतृत्व करने तथा स्वयं अपने लिए, अपने परिवारों, अपने समुदायों तथा राष्ट्र में बदलाव लाने के लिए, लक्ष्य साधा. पं. नेहरू ने एक बार कहा भी था 'आप किसी भी राष्ट्र की स्थिति के बारे में उसकी महिलाओं की स्थिति को देख कर बता सकते हैं। महिलाओं पर आयोजित चौथे विश्व सम्मेलन (1995) के बीजिंग घोषणा पत्र में यह उल्लेख किया गया, 'समाज के सभी क्षेत्रों में समानता के आधार पर महिलाओं का सशक्तीकरण तथा उनकी पूरी सहभागिता, जिसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया तथा शक्ति तक पहुँच में सहभागिता भी शामिल है, समानता, विकास, और शांति प्राप्त करने के मूलभूत आधार हैं, भारत में महिलाओं की साक्षरता दर में प्रत्यक्ष वृद्धि हुई है और यह 53.67 प्रतिशत (जनगणना 2001 से) बढ़कर 65.46 प्रतिशत (जनगणना 2011) हो गई है। तथापि अभी भी साक्षरता में महिलाओं और पुरुषों में 16.68 प्रतिशत की जो गहरी खाई है, उसे पाटने की ज़रूरत है। इस संदर्भ में यह अत्यंत प्रसन्नता और संतोष का विषय है कि आपका कॉलेज आधी सदी पहले, अपनी स्थापना से लेकर आज तक महिलाओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान करके इस क्षेत्र की महिलाओं के सशक्तीकरण का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि आपका कॉलेज गत सात वर्षों से लगातार, 'सर्वश्रेष्ठ महिला कॉलेज' का पुरस्कार जीत रहा है। तथापि मैं आपको यहाँ यह भी स्मरण दिलाना चाहूँगा कि इस तरह की प्रशंसाओं से आपके कॉलेज, आपके अध्यापकों, प्रशासकों, छात्रों पर और अधिक जिम्मेदारी आ जाती है कि वे और भी कड़ा परिश्रम करें और इस महान संस्था का नाम सदा ऊँचा रखें।

5. वर्षों से भारत में महिलाएं, हमारे समाज की सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थिरता और लोकाचार की निरंतरताओं और स्थिरताओं को बड़ी खामोशी से पोषित करती रही हैं। तथापि आज, जिस विश्व में हम रह रहे हैं उसकी परिरेखाएं बड़े नाटकीय ढंग से बदल रही हैं। जिस काल में हम बड़े हुए हैं, और रह रहे हैं उसके नए निर्देशांक बन गए हैं। शिक्षित तथा ज्ञान और कौशल से भरपूर आज की महिलाएं, व्यवसाय, कैरियर, प्रोफेशन स्पर्धा तथा उपलब्धियों के विश्व में बड़े पैमाने पर प्रवेश कर रही हैं और खुद का एक स्पेस बना रही हैं जिसमें बल, स्वयं की अभिव्यक्ति पर है, और एक स्वतन्त्र, स्वायत्त व्यक्तित्व के रूप में स्वीकृति पाने पर है।

6. हमारी महिलाएं आज अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं को खोजने और पहचानने की अपनी सामर्थ्य के बारे में, पहले से कहीं अधिक विश्वस्त हैं और साथ ही ये समाज और संबंधियों द्वारा परिभाषित स्वरूप से कहीं आगे जाकर स्वयं के लिए एक नई दृष्टि खोजने के प्रति आशावान हैं। आज वे उन दृश्य क्षितिजों और सरहदों के पार अपना भविष्य खोजने की संभावनाएं तलाश रही हैं।

7. हाल के वर्षों में, महिला सशक्तीकरण, स्त्रियों के प्रति भेदभाव तथा महिलाओं के प्रति हिंसा जैसे विषयों पर गंभीर चर्चाएं हो रही हैं और भारत में सामाजिक अनुसंधान भी हो रहे हैं। पिछले वर्षों में भारत में महिलाओं की स्थिति पर बहुत से प्रयास हुए हैं और इन अध्ययनों से स्पष्टतः प्रकट हुआ है कि आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता बहुत कम है। दिसम्बर 2012 में जारी किए गए 12वीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप दस्तावेज में उल्लेख किया गया है कि 1980 से महिलाओं की ''कार्यशक्ति (वर्कफोर्स) सहभागिता दर (डब्ल्यूपीआर)'' में निरन्तर गिरावट आ रही है मगर यह गिरावट 2004-05 से 2009-10 के बीच काफी तेज़ रही। महिला श्रमशक्ति सहभागिता में यह गिरावट ग्रामीण तथा शहरी, दोनों इलाकों में रही, हालांकि शहरी

इलाकों के मुकाबले, देहाती इलाकों में यह गिरावट और भी तेज़ रही।

8. मानव विकास रिपोर्ट 2013, लिंग असमानता सूचकांक प्रस्तुत करती है, जो कि जनसंख्या में महिलाओं हेतु अवसरों तथा उनके दर्जे में असमानता का एक पैरामीट्रिकृत संकेतक है। इसका आकलन तीन पैरामीटरों पर आधारित है अर्थात श्रम बाज़ार, सशक्तीकरण तथा प्रजननात्मक स्वास्थ्य। यह बहुत निराशाजनक है कि लिंग असमानता के दर्जे की दृष्टि से, भारत 132 वें स्थान पर है जो कि पिछली रिपोर्ट के मुकाबले और भी तीन स्थान नीचे गिरा है। लिंग असमानता का हमारा यह दर्जा (रैंकिंग), हमारे इन दावों से एकदम उलट है कि हम एक प्रगतिशील समाज हैं और एक विकासशील राष्ट्र हैं। इसलिए हमें इस स्थिति को उलटने के लिए जल्द ही काफी प्रभावी उपाय करने पड़ेंगे। इस रूपान्तरण को मूर्तमान करने के लिए हममें से प्रत्येक को प्रयास करने होंगे चाहे हम किसी भी प्रोफेशन या किसी भी पोज़ीशन पर क्यों न बैठे हों।

9. स्वतंत्रता से पूर्व हमारी श्रमशक्ति में,पुरुष-स्त्री के बीच का भेदभाव एक स्वीकृत मापदण्ड था। 1970 से विद्वानों और एक्टिविस्ट्स ने उन असमानताओं को चुनौती देना शुरू किया जिन्होंने मजबूती से जड़ें जमा रखी थीं और उन्हें उलटने के लिए अपनी लड़ाई शुरू की। इन असमानताओं में शामिल थीं - महिलाओं को असमान वेतन, महिलाओं को अकुशल मानकर उन्हें तदनुसार कार्य देना, तथा औरतों को केवल 'श्रम की रिज़र्व फौज' मानना। इन विद्वानों तथा एक्टिविस्ट्स ने, चर्चा में, वर्ग-जागरूकता पर ध्यान केन्द्रित करने पर बल दिया है जिसमें न केवल महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता की बात है बल्कि हमारे सामाजिक ढांचे के भीतर भी जाति, कबीले, भाषा, धर्म, प्रांत अथवा क्लास संबंधी जो असमानताएं है उन पर भी चर्चा हेतु ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। हाल के वर्षों में इन चर्चाओं का केन्द्र, महिलाओं को समाज की उपयोगी सदस्य मानने से भी आगे निकल गया है और अब महिलाओं के सशक्तीकरण पर बल है ताकि वे अपने व्यक्तिगत जीवन की दिशा तय कर सकें और स्वयं-निर्धारण की ओर बढ़ सकें। मुझे खुशी है कि वी.वी.वन्नियापेरुमल कॉलेज, वर्ष-दर-वर्ष, ज्ञानवान और सशक्त महिलाओं को समाज में भेजने की रुपान्तरणकारी भूमिका निभा रहा है ताकि ये महिलाएं संसार में अपने लिए नई जगह बना सकें।

10. वित्तीय रूप से अनावेशित पुरुषों और महिलाओं के बीच अनुपात का अंतर महिलाओं में शिक्षा और सशक्तीकरण के अभाव को स्पष्ट परिलक्षित करता है। भारत में महिलाएं पुरुषों के मुकाबले, वित्तीय रूप से बहुत कम समावेशित हैं। यह इसी साक्ष्य से प्रकट होता है कि कुल बैंक डिपॉज़िट एकाउंट्स में से, केवल 21 प्रतिशत महिलाओं के थे और कुल ''वॉल्यूम ऑफ डिपॉज़िट्स'' का केवल 12 प्रतिशत बनते थे। इसी प्रकार 2011 में महिलाओं ने, बैंकों से कुल छोटे क्रेडिट का केवल 12 प्रतिशत ही प्राप्त किया। इसलिए महिला सशक्तीकरण के प्रयासों में अनिवार्यतः, डिपॉज़िट तथा क्रेडिट खातों तक उनकी पहुंच बनाकर उन्हें औपचारिक वित्तीय प्रणाली से संयुत करना कार्यनीतियों में शामिल होना चाहिए।

11. तथापि राष्ट्र के आर्थिक विकास में बैंकों की केन्द्रीयता को देखते हुए महिला सशक्तीकरण में उनकी भूमिका महिलाओं को मात्र औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ने तक ही सीमित नहीं रखी जा सकती। भारत का बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र, महिलाओं को रोज़गार देनेवाले एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। तथापि संबंधित आंकड़े बताते हैं कि अभी भी इस सेक्टर में उनकी उपस्थिति में सुधार की व्यापक गुंजाइश है। विशिष्टतः वित्तीय क्षेत्र, अपने कर्मचारियों में उत्साह, कटिबद्धता तथा दयालुता के गुणों की चाह करता है जो कि महिलाओं में प्रचुर मात्रा में होते हैं। महिलाओं में जो तदनुभूति और समझदारी की भावनाएं होती हैं वे उनसे, अपने सहयोगियों में मानसम्मान और स्वीकार्यता अर्जित करवाती हैं। विशेषज्ञता अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि महिलाएं कर्मचारियों, शेयरधारकों, और ग्राहकों की चिंताओं के साथ डील करने में अधिक अनुकूलक हैं। वे

न केवल जानकारी को कोलेट करने और मिलाने में ही अच्छी हैं, बल्कि अपनी बेहतर अंतर्दृष्टि से समझदारी भरे निर्णय लेती हैं। नेता के रूप में महिलाएं, सुदृढ़ता, विश्वास, समावेशिता और भरोसे का वातावरण साथ लाती हैं। इसलिए इसमें कोई अचम्मे की बात नहीं है कि महिलाएं आज भारत में न केवल सरकारी बल्कि प्राइवेट क्षेत्र के बैंकों में भी शिखर पर हैं। मैं इन युवा महिला स्नातकों को आज वित्त एवं बैंकिंग को अपना कैरियर चुनने का आह्वान करता हूं जहाँ कि वे सही मायनों में आगे निकल सकती हैं तथा ग्राहकों और समाज की सेवा, उपलब्धि के साथ कर सकती हैं।

12. जैसा कि आपको ज्ञात ही होगा माननीय केन्द्रीय वित्त मंत्री, श्री पी. चिदम्बरम ने अपने केन्द्रीय बजट में प्रस्तावित किया है कि एक ''केवल महिलाओं का सरकारी बैंक'' शीघ्र ही स्थापित किया जाएगा जिसमें प्रमुखतः महिलाओं को ही लगाया जाएगा और यह बैंक, ऋण भी महिलाओं को ही देगा। यह वास्तव में एक बहुत ही स्वागत-योग्य-कदम है जो एक तरह से रिज़र्व बैंक के वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रयासों को और आगे बढ़ाएगा जो कि वित्तीय सेवाओं के बारे में जागरूकता लाने तथा उस तक पहुंच बनाने पर ही मज़बूती से केन्द्रित है।

13. बैंकिंग का संसार वस्तुतः इतिहास का ही एक आइना है। कहावत है कि रूपया है तो ही संसार चलता है। बैंकिंग गतिविधियाँ एक ऐसा पहिया है, जो निरंतर घूम रहा है। भारत में भी बैंकिंग, कई चरणों से हो कर गुज़री है। हालाँकि इतिहासकार भूतकाल को रूपांतरणकारी परिवर्तनों की दृष्टि से अनगिनत हिस्सों में बाँट सकते हैं, मगर भारत में बैंकिंग में स्वातन्त्र्योत्तर काल में बहुत ही कम मोड़ बिन्दु आए हैं।

14. सबसे पहला मोड़ था बैंकिंग विनियमनकारी अधिनियम, 1949, का अधिनियमन जिसने भारत में बैंक विनियमन और पर्यवेक्षण की व्यापक और औपचारिक संरचना की शुरुआत की। दूसरा मोड़ था 1969 में हमारे देश में बैंकों का राष्ट्रीयकरण, जिसने ऐसी शक्तियाँ निर्मित कीं, जो बैंकिंग को आभिजात्य वर्ग से आम लोगों तक ले गई। इसने देश के भौगोलिक विस्तार के आर-पार एक बहुत ही व्यापक मूलाधार स्थापित किया जो वित्तीय संस्थाओं के विस्तार और आम आदमी के सशक्तीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित हुआ। बैंकिंग में तीसरा मोड़ तब आया जब 1990 के दशक की शुरुआत में आर्थिक सुधार शुरू किए गए।

15. ये सुधार बाहरी रुकावटों पर विजय पाने के लिए बैंकों हेतु एक समर्थनकारी वातावरण निर्मित करने के लिए प्रारंभ किए और जारी रखे गए। ये बाहरी रुकावटें ब्याज़दरों की प्रशासित संरचना प्रारक्षित आवश्यकताओं के स्वरूप में हकशफा (प्री एंप्शन) के उच्च स्तर, और कुछ क्षेत्रों को किए जाने वाले क्रेडिट एलोकेशन से संबंधित थीं। बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों का एक प्रमुख उद्देश्य था स्पर्धा के द्वारा क्षमता और उत्पादकता में सुधार लाना। जैसा कि आप जानते ही हैं रिज़र्व बैंक इस समय प्राइवेट क्षेत्र में नए बैंकों की स्थापना के लिए लाइसेंस जारी करने पर विचार कर रहा है।

16. इस बदले पर्यावरण और अधिक स्पर्धा से पैदा हुई आंतरिक मजबूरियाँ तथा बाज़ार में अपने हिस्से में और / अथवा लाभप्रदता में सुधार लाने की जरूरत की वजह से बैंकों को अपने वातावरण की वास्तविकताओं और अपनी आंतरिक कमजोरियों और सुदृढ़ताओं को देखते हुए अधिक क्षमता की खोज के लिए स्वयं को रिपोजीशन करने के लिए प्रयास करने होंगे। इससे आप जैसे स्नातकों और स्नातकोत्तरों के लिए और अधिक अवसर बनने की भी संभावनाएँ निर्मित होती हैं। अब रिज़र्व बैंक भी हर साल बहुत से लोगों की भर्ती करता है। यह आप जैसे उम्मीदवारों के लिए सुनहरा अवसर है और हर वर्ष इसके लिए आप तैयारी कर सकते हैं।

17. आज हम अभूतपूर्व अवसरों के युग में रह रहे हैं, परंतु अवसरों के साथ-साथ जिम्मेदारियाँ भी आती हैं। यह कल के प्रबंधकों के लिए है कि वे अपने लिए खुद स्थान बनाएँ और यह जानें, कि राह कब बदलनी है और पूरे समय स्वयं को कैसे व्यस्त और उत्पादक रखना है। कार्य को अच्छी तरह निभाने के लिए व्यक्ति को स्वयं की गहरी समझ विकसित करने की जरूरत है - केवल

कमजोरियाँ और सुदृढ़ताएँ ही नहीं, बल्कि यह भी कि व्यक्ति कैसे सीखता है, कैसे दूसरों के साथ मिलकर काम करता है, उसके मूल्य क्या हैं और वह सबसे अधिक योगदान कहाँ कर सकता है, या कर सकती है, क्योंकि जब कोई मजबूती से काम करता है तभी वह सच्ची उत्कृष्टता प्राप्त कर सकता है। इसलिए आप सब सीखते रहिए, स्वयं को, और अपने वातावरण को समझते रहिए, ताकि आप जीवन की हर भूमिका में सफलता प्राप्त करते रहें, और सबसे आगे रहें।

18. बैंकिंग तथा वित्तीय क्षेत्र में उभरती चुनौतियाँ, ग्राहक संबंधों, उत्पाद विभिन्नताओं, ब्रांड वैल्यूज़, प्रतिष्ठा, कार्पोरेट गवर्नेंस तथा विनियामक नुस्खों की माँग को पूरा करने के लिए एक नई, अधिक गतिशील, आक्रामक, तथा चुनौती भरी कार्य संस्कृति की जरूरत को रेखांकित करती है। जिन संस्थाओं में आप कार्य करने के लिए जाएँगे उनके लिए कार्यनीतियाँ बनाते समय आप जैसे युवाओं के लिए कठिन परिवर्तनों को समझना और उनके हल निकालना ही सफलता की कुँजी होगी। यद्यपि नई पीढ़ी के प्रबंधकों के लिए नेतृत्व कौशल, विभिन्न कार्य एक साथ करने की योग्यता, तथा स्पर्धात्मक अनिवार्यताओं का प्रबन्धन, आवश्यक तत्व है, मगर सीखने की तलक, व्यावसायिक एथिक्स की मज़बूत भावना, खोजी दिमाग, कार्यनीतिगत दृष्टिकोण विनम्रता और तदनुभूति के गुण, व्यावहारिक अनुभव लेने की इच्छा, तथा नए अनुभवों से सामंजस्य बिठाने जैसी पुरानी शैली के गुण भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि जहां बहुकार्य एक साथ करने की योग्यता, और अनिवार्यताओं के प्रबंधन का प्रश्न है, महिलाएं इनमें अग्रणी रहती हैं।

19. प्रख्यात शिक्षा शास्त्री (हार्वर्ड विश्वविद्यालय) डॉ. चार्ल्ज़ इलियट से प्रायः पूछा जाता था, हार्वर्ड को महानतम ज्ञान भंडार की प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त हुई? उनका जवाब होता था, ''क्योंकि नए विद्यार्थी अपने साथ इतना कुछ लाते हैं और सीनीयर्स बहुत कम अपने साथ ले जाते हैं।'' मज़ाकिया प्रोफेसर ने यह बात हंसी मज़ाक में ही कही थी। मुझे यकीन है कि आपके कॉलेज ने आपको जो भी दिया उसका आपने भरपूर लाभ लिया और आप यहाँ से अपने साथ, ज्ञान का एक बड़ा भंडार लेकर जा रहे हैं। अपने अध्ययन काल में आपने जो सीखा है मुझे विश्वास है कि उससे आप को ऐसी अन्तर्दृष्टि मिलेगी कि आप मोड़ से आगे का भी देख पाएँगे, दूसरों से बहुत पहले।

20. समापन करने से पूर्व तीन मूल संदेश मैं सदा देना चाहता हूँ, जब भी मैं छात्रों के साथ चर्चा करता हूँ। आप सब ने अपना छात्रजीवन पूरा कर लिया है और अब आप शीघ्र ही व्यावसायिक जीवन में उतरने वाले हैं। इस संस्था में आपने जो शैक्षिक ज्ञान पाया है मुझे भरोसा है कि आप उससे, एक सफल कैरियर बनाने में समर्थ होंगे। मेरा आप सब को पहला संदेश यह है कि आप जीवन में कभी भी ढीले न पड़ें, और आत्मसंतुष्ट न हों क्योंकि ढिलाई असफलता का शॉर्टकट है। अपने अच्छे समय में समझदारी से योजना बनाएँ ताकि बुरे समय में जीने के लिए काफी संसाधन रहें। मेरा दूसरा संदेश यह है कि हालाँकि बुरा समय अपरिहार्य होता है पर निश्चित ही यह स्थायी नहीं होता। इसलिए कभी निराश नहीं होना चाहिए और साहस नहीं छोड़ना चाहिए। सकारात्मक रहें और कड़ा परिश्रम करें। अच्छा समय फिर वापस आ जाएगा। जीवन में तथा अपने व्यावसायिक कैरियरों में सफलता के लिए मेरा तीसरा संदेश यह है कि आप 'जानकारी साक्षर' रहें। ज्ञान पाने और उसे जज़्ब करने और उस ज्ञान को बिना भेदभाव के निर्णय लेने में उपयोग करने की चाहत बनाए रखें। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि जो निर्णय आप ले रहे हैं वे आपके सर्वोत्तम हित में तथा जिस संस्था के लिए आप कार्य कर रहे हैं उसके हित में है।

निष्कर्ष

21. हम बड़े उत्तेजक युग में रह रहे हैं और अब आप एक नए जीवन की दहलीज़ पर खड़े हैं। मुझे उम्मीद है कि आप यौवन के आदर्शों और सपनों पर अमल करना जारी रखेंगे क्योंकि आखिर वही जीवन को जीने योग्य बनाते हैं। निश्चय ही आपको अपनी उपलब्धियों के समारोह मनाने चाहिएं मगर आपको यह भी सोचना चाहिए कि अब

आप पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी आने वाली है। यहाँ आपने जो ज्ञान और कौशल प्राप्त किया है और जो मूल्य अर्जित किए हैं, उन सबका उपयोग आपको न केवल व्यावसायिक क्षेत्र में अपने लिए एक स्थान निर्मित करने के लिए करना है, बल्कि आपको अपने घरों, समाज और देश में भी बदलाव लाने के लिए करना है। आपके अध्यापकों और आपकी संस्था ने आपमें जो मूल्य भरे हैं उन मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए आपको कटिबद्धतापूर्वक कार्य करना है, यही अपने अध्यापकों और अपनी संस्था के प्रति आपकी एक सही गुरुदक्षिणा होगी।

22. आपके भावी जीवन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ!